4. स्वदेशी

लेखक :- बदरीनरायण चौधरी प्रेमघन

जन्म :- 1855 मिर्जापुर (उत्तरप्रदेश)

→ ये भारतेन्दु युग के कवि है |

निधन → 1922

ये भारतेन्दु हरिषचन्द्र को अपना आदर्श मानते थे।

→ 1874 ई0 में मिर्जापुर मे रसिक समाज का स्थापना किया।

→ 1874 आनंद कांदमनी मासिक पत्रिका तथा नागरी नामक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया ।

→ साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेश में सभापति रहे।

→ इसकी रचना प्रेमधन सर्वस्व के नाम से संकलित होती है।

→ प्रेमधन एक नाटकर, कवि, निबंधकार तथा समीक्षक है |

→ प्रसिद्ध नाटक प्रभाग रमाभजन तथा भारत सौभाग्य है |

→ उन्होंनें जीर्णजनपद नामक काव्य की रचना कीया है | जिसमें उन्होंनें ग्रामीण जीवन का यर्थात चित्रण किया है |

→ इसकी रचना ब्रजभाषा तथा मगधी मे मिलती है |

→ स्वदेशी पाठ प्रेमधन सर्वस्व से लिया गया है |

→ इसके दोहे में नव जागरण का स्वर मुखरित होता है |

1. सबै विदेशी वस्तु नर, गति रीत रति लख्यात।

भारतीयता कछु न अब भारत मे दरसात|

अर्थ : → भारत में भारतीयता नाम का कुछ नही बचा है |यहाँ के लोगों का स्वभाव , रीति - रिवाज सभी पक्षों में विदेशी वस्तु से लगाव हो गया है |

2. मनुज भारती देखि कोउ, सकत नहीं पहचान ।

मुसल्मान , हिंदू किधौं के है ये क्रिस्तान ।

अर्थ :- देखकर कोई पहचान नही कर सकता है कि यह आदमी भारतीय है क्योंकि मुसलमान, हिन्दू सभी अंग्रेज जैसे लगते है |

3. पढ़ी विद्या प्रदेश की बुद्धि विदेशी पाय।

चाल - चलन परदेश की गई उन्हें अतिभाय -

अर्थ :- विदेशी विद्या पढ़कर और विदेशी बुद्धि पाकर उनको विदेशी चाल चलन बहुत अच्छा लगने लगा है।

4. ठरे, विदेशी ठार सब, बन्यो देश विदेश

सपने हूँ जिनमें न कहुँ भारतीयता लेस |

अर्थ :- विदेशी ठार में बस सजु गये है देश भी विदेश जैसा लगने लगा है सपना में भी भारत के लोगों में भारतीयता नाम की कोई चीज नही बची है।

5. बोलि संकत हिन्दी नहीं अब मिलि हिंदू लोग।

अंग्रेजी भाखान करत सब अंग्रेजी उपयोग |

अर्थ:- अब हिन्दू बोरा भी परस्पर हिंदी में बात नही करते हैं अंग्रेजी बोलना और अंग्रेजी वस्तु का उपयोग कसा ही भारतीय को अच्छा लगता हीँ

6. अंग्रेजी वाहान बसन, बसन भेष रीति ओ नीति ।

अंग्रेजी रुचि गृह, संकेत वस्तु देश विपरित |

अर्थ :- अंग्रेजी वाहान अंग्रेजी वस्त्र, अंग्रेजी वेशभूषा, अंग्रेजी रिति - रिवाज, अंग्रेजी विचार अंग्रेजी रुचि आदि सभी चीजें देशी के विपरित विदेशी लोगों को अच्छा लगने लगा है |

7. हिन्दुस्तानी नाम सुनि अब ये सकुधि लाजात |

भारतीय सब वस्तु ही, सौ से हाथ घिनात |

अर्थात :- हिन्दुस्तानी नाम सुनकर ही भारत के लोग लज्जित हो जाते है। भारतीय सभी वस्तु से भारतवासियों को घृणा हो गयी है

8. देस नगर बमक बनो सब अंग्रेजी चाल ।

हारन में देखहु भरा बसे अंग्रेजी माल |

अर्थ :- संपूर्ण देशवासी की वेशभूषा अब शहरी हो गयी है | सारे 'चाल-चलन में अब अंग्रेजीपन आ गया है | ग्रामीण बाजार में अब केवल अंग्रेजी वस्तु हो बिखड़े दिखते है |

जिनसों सम्हल सकत नहिं तन की धोती ढीली–ढीली

धोती देश प्रबंध करि लेंगे वे यह, कैसी खाम ख्याली ।"

अर्थ :- जिन नेताओं के शरीर में भारत की ढिली-ढिली धोती नहीं संभाल में आती है,

वो देश का शासन संभाल लेंगे ये तो उनकी कोरी कलपना जैसी है।

दास वृति की चाह चहूँ दिली चारहूँ 'वरन बढ़ाली

करत खुशामद झूठ प्रशंसा मानहूँ बने डकाली।

अर्थ :- गुलामी कर जीवनयापन करना ब्राहमण क्षेत्रीय शुद्ध-वेश्य चारों वर्णों के लोगों की चाहत हो गई है |अंग्रेजी की खुशामद करने वाले भारतीय वस्तु की झूठी प्रसंशा करने वाला ये भारतीय मानो उफाली बजाने जैसी है |

Objective -

1. स्वेदेशी के रचनाकार कौन है

Ans - बदरीनारायण चौधरी (प्रेमघन)

2. बदरीनारायण प्रेमघन का जन्म कब हुआ था ?

Ans – 1855 ई०

3. प्रेमघन अपना आदर्श किसे मानते है ?

Ans - भारतेन्दु हरिशचन्द्र को

4. आनंद कांदमनी मालिक पत्रिका का संपादन कौंन किये हैं ?

Ans – प्रेमघन

5. प्रेमधन जी कवि के साथ-साथ क्या थे ?

Ans - निबंधकार, नाटककार, कवि, समीक्षक

6. कवि प्रेमघन के अनुसार भारतीय हार बाजार किस समान से भरे है ?

Ans - विदेशी समान

7. कृवि प्रेमघन के अनुसार, भारतीय लोग क्या बनकर खुशामद और झूठी प्रशंसा करते है |

Ans – डफाली

8. बोलि सकत ------- नही। अब मिलि हिन्दी लोग |

Ans - हिन्दी

9. प्रेमघन के अनुसार किस काव्य में ग्रामीण जीवन का यर्थार्थवादी चित्रण है |

Ans – जीर्ण जनपद

10. कवि प्रेमघन द्वारा अधिकांश काव्य रचना किस भाषा में की गई है ?

Ans - ब्रजभाषा और अवधि

11. प्रेमघन के प्रसिद्ध नाटक कौन है ?

Ans - रामागमण

12. स्वदेशी कविता किससे संकलित संकलित

Ans - प्रेमघन सर्वस्व से

- Subjective -

1. कविता के शीर्षक सार्थकता स्पष्ट करें |

Ans. - ' स्वदेशी ' शीर्षक सार्थक है | 'क्योंकि इस कविता में लोगों को स्वदेशी वस्तु से नफरत जैसी हो गई है | लोग स्वदेशी का नाम सुनकर लज्जा अनुभव करत है | इस कविता में स्वदेशी वस्तु से अलग भारतीय को दिखाया गया है |

2. कवि को भारत में, भारतीयता क्यों नहीं दिखाई पड़ती है ?

Ans - क्योंकि भारतीय लोगों के स्वभाव रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, चाल-चलन, वेशभूषा सब विदेशी हो गया है |अब सबको विदेशी लोग ही अच्छा लगने लगा है| यहाँ तक की भारतीय लोग को भारत का नाम से भी घृणा, होने लगा है। इसलिए कवि को भारत मे भारतीयता नही दिखता है |

3. कवि समाज के किस वर्ग की आलोचना करते है और क्यों ?

Ans - कवि समाज के प्रबुद्ध लोग की आलोचना करते है, क्योंकि प्रबुद्ध लोग विदेशी विद्या – पढ़कर, विदेशी बुद्धि पाकर अपने चाल-चलन को भी छोड़ दिया है | उन्हें विदेशी चीजें तथा विदेशी भाषा ही अच्छा लगने लगा है |

4. कवि नगर, बाजार और अर्थव्यवस्था पर क्या टिप्पणी करता है ?

Ans - कवि नगर, बाजार, अर्थव्यवस्था पर टिप्पणी देते हुए कहते है कि सब पर विदेशी हावी हो गया है | बाजार, नगर में केवल विदेशी वस्तु ही बिखड़े दिखाई पड़ते है |

5. नेताओं के बारे में कवि की क्या राय है ?

Ans - स्वदेशी पाठ मे प्रेमघन जी कहते है, जिन नेताओं से भारत की ढीली – ढीली धोती नहीं संभल सकती वो देश को क्या संभालेगें ये तो उनकी कोरी कल्पना है।

6. कवि ने डफाली किसे कहा और क्यों ?

Ans - कवि प्रेमधन जी डफाली उनको कहा है जिसको भारतीय वर्ण व्यवस्था अच्छा लगता है, क्योंकि ये लोग गुलामी करके जीना चाहते है और स्वदेशी वस्तु की झूठी प्रशंसा करते है।

व्याख्या करें :-

(क) मनुज भारती देखि कोउ ; सकत नहीं पहिचान ।

Ans - प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ पुस्तक गोधूलि भाग -2 के स्वदेशी शीर्षक प्रेमघन द्वारा रचित पाठ से लिया गया है | कवि के अनुसार, भारतीय लोग पर विदेशी विद्या पढ़कर, विदेशी बुद्धि पाकर, विदेशी वेशभाषा , चाल- चलन, विदेशी भाषा हावी हो गया है ' हम भारत के लोगों को देखकर यह नहीं बता सकते है कि ये भारतीय नागरीक है |

(ख) अंग्रेजी रुची गृह सकल वस्तु देश विपरित ।

Ans - प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ-पुस्तक गोधूली भाग - 2 स्वदेशी शीर्षक प्रेमधन द्वारा रचित पाठ से लिया गया है, इस पाठ मे कवि प्रेमघन जी के अनुसार **अंग्रेजी** वस्तु में हमारी रूचि बढ़ जाने से हमारे घर मे उपयोग होनेवाले सभी वस्तु विदेशी दिखाई पड़ रहे है जो कि भारत के विपरित है |

भाषा की बात :-

(1)निम्नांकित शब्दों से विशेषण बनाएँ -

1. रुचि	रुचिकार
2. देश	देशी
3. नगर	नगरीय
4. प्रबंध	प्रबंधन
5. ख्याल	ख्याली
6. दासता	दास
7. झूठ	झूठा
8. प्रशंसा	प्रशंसनीय

10. कविता से संज्ञा पदों का चुनाव करें। और उनके प्रकार

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	समूहवाचक	द्रववाचक	भावाचक
अंग्रेज	नर			रुचि
अंग्रेजी चाल	मनुज			दासवृत्ति
अंग्रेजी माल	मुसलमान			
	हिन्दू			
	वाहन			
	नगर			